International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 03 Issue 10
October 2017

देख रहा ठहरा साहिल

देव कुमार शर्मा

हम साहिल
बैठे देख रहे है
दरिया की मौजें
सदा बहती इसकी पानी
कह रही संस्कृति की कहानी
जीवन की रवानी
मौज-इ-जवानी
है मेरा दिल फूलों से नाजुक
चोट खाए है
फूलों की पंखुरियों से
चुभा है दिल में
कांटें नहीं
फूलों की खुसबू
है मेरे दिल की दास्ताँ
समझ सका न कोई इन्सान
है मेरा दिल सागर से भी गहरा
गहरा, अति गहरा
अथाह

है एक सागर
उठती है लहर
मेरे दिल के अन्दर
है असंख्य मोती
रत्ना कीमती
मणि और सांप
मछली और घरियल
देख रहा ठहरा साहिल